REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

"कामायनी का दर्शन"

डॉक्टर कनक लता
असिस्टेंट प्रोफेसर, मदन मोहन मालवीय पीजी कॉलेज, भाटपार रानी, देवरिया.

प्रस्तावना:

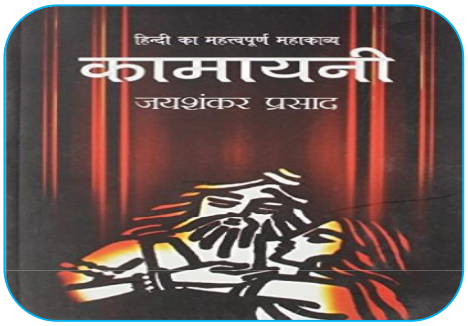

कामायनी हिंदी का अद्वितीय महाकाव्य है। कामायनी में जयशंकर प्रसाद की दार्शनिक विचारधारा आध्यात्मिकसौंदर्य से ओत-प्रोत है। प्रसाद जी का दर्शन शैवमत पर आधारित आनंद वाद है। दर्शन का संबंध आध्यात्मसे ही होता है, आनंद वाद का रूप भी आध्यात्मिक है परंतु प्रसाद जी ने मानव की सहज वृत्तियों के चित्रण द्वारा इस अध्यात्म को व्यवहारिक बना दिया है। इसमें दर्शन कितरहशुष्कता नहीं है, दर्शन की बौद्धिकता में हृदय का मिश्रण प्रसाद जी की मौलिक अनुभूति है। प्रसाद जी ने दर्शन को अनुभूति की कसौटी पर रखकर कविता से आबद्ध कर श्रेय को प्रेय बना दिया है।

वस्तुतः कामायनी एक ऐतिहासिक महाकाव्य है परंतु इसमें इतिहास के साथ-साथ रूपक को भी प्रयुक्त किया गया है। वाह्य घटनाओं के मूल में कवि ने कुछ ऐसे दार्शनिक सिद्धांतों की चर्चा की है जिनके आधार पर मनु-मन, श्रद्धा-हृदय,इडा-बुद्धि का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। कामायनी में कवि ने शैवागमोंके प्रत्यभिज्ञा दर्शन को आधार बनाकर इस महाकाव्य की रचना की है।

कामायनी के दर्शन पर चर्चा करने से पहले हमेंप्रत्यभिज्ञा दर्शन को जानना आवश्यक है। प्रत्यभिज्ञा दर्शनमूलतःशैव दर्शन का स्वरूप माना जाता है अर्थात इस दर्शन का सीधा संबंध शिव से जुड़ा है। शिव ही चित्त हैं तथा सभी चित्तमय पदार्थ उसी से उत्पन्न होकर पुनः उसी में लीन हो जाते हैं। यह सृष्टि उसी का उन्मीलन है-

"उन्मीलनम अवस्थितस्यैतत् प्रकटीकरणम"

प्रत्यभिज्ञा दर्शन के प्रतिष्ठापक आचार्य अभिनव गुप्त माने जाते हैं। आगम शास्त्र में अद्वैत का अर्थ है- दो अर्थात आत्मा एवं परमात्मा का नित्य सामश्र्य होना। अभिनव गुप्त के अनुसार माया परमात्मा की शक्ति है तथा उसके पांच कुंचक हैं- कला,विद्या,राग,कॉल व नियति। इन पांच तत्वों के भीतर प्रवेश करने से इनके स्वरूप का ज्ञान हो जाता है,और मनुष्य को माया से मुक्ति मिल जाती है। शैव दर्शन के अनुसार माया ही काम कला है। इसमें आगव ,कर्म और मायीय तीन मूल हैं। ये तीन ही बंधन कहलाते हैं, इन बंधनों या पाशों में आबद्ध जीव पशु है और ईश्वर पशुपति है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार इन कुंचको आदि से

आबद्धजीव पुरुष कहलाता है। शक्ति, आणव तथा शांभवोपाय के द्वारा जीव बंधनों को काट सकता है लेकिन इन तीनों उपायों में शांभवोपाय ही सर्वश्रेष्ठ है।

प्रत्यभिज्ञादर्शन के अनुसार जब जीव अर्थात पशु समरसता को ग्रहण कर लेता है तब वह कुंचको से मुक्त होकर पशुपति अर्थात ईश्वर से जुड़ जाता है।प्रत्यभिज्ञादर्शन में समरसता के सिद्धांत को विशेष महत्व प्राप्त है। दूसरे शब्दों में इसी को मुक्ति कह सकते हैं। प्रसाद ने कामायनी में प्रत्यभिज्ञादर्शन को ही आधार बनाया है।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन का विकास कश्मीर में हुआ, अतः इसे "कश्मीरी शैव दर्शन" भीमाना गया। राय कृष्णदास के अनुसार प्रसाद जी पर शैव दर्शन का गहरा प्रभाव था–"प्रसाद के परिवार की मुख्य दार्शनिक विचारधारा प्रत्यभिज्ञा दर्शन की परंपरा में थी, क्योंकि ये लोग शैव-दर्शन में से कश्मीर केप्रत्यभिज्ञा दर्शन को ही अत्यंत पुष्ट एवं प्रबल मानते थे। प्रसाद कवि एवं दार्शनिक दोनों थे। प्रायः दार्शनिकता में बुद्धि तत्व की प्रधानता होती है, जबकि काव्य में हृदय की। दोनों की कार्यप्रणाली भी अलग-अलग होती है। दार्शनिक अपनी बात तर्कपूर्ण ढंग से शास्त्रीय शैली में कहता है,जबकि कवि अपनी बात भावात्मक शैली में करता है। कामायनी में हमें प्रसाद जी का दार्शनिक रूप देखने को मिलता है। प्रसाद कामायनी में ब्रह्म को ही आनंद मानते हैं-

"कर रहीलीलामय आनंद
महाचिति सजग हुई सी ब्यक्त
विश्व का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते हैं अनुरक्त"

वस्तुतः कामायनी का मूल प्रतिपाद्य ही आनंद है। इस संबंध में प्रसाद जी ने अपने "रहस्यवाद" नामक निबंध में बतलाया है कि 'जीवन में यथार्थ वस्तु आनंद है। ज्ञान से या अज्ञान से मनुष्य उसी की खोज में लगा है।' परंतु कामायनी में प्रतिपादित आनंद वेदांत में प्रतिपादित आनंद की तरह का आनंद नहीं है, अपितु कामायनी का आनंद शैव दर्शन का आनंद है। डॉ० विजेंद्र स्नातक के अनुसार-'मनु अर्थात मनन शक्ति के साथ श्रद्धा अर्थात हृदय की भावात्मक सत्ता या विश्व समन्वित रागात्मिकावृत्तितथा इडा अर्थात व्यावसायात्मिकाबुद्धि संघर्ष और समन्वय का विवेचन ही कामायनी का दार्शनिक आधार है। वस्तुतः प्रसाद जी ने वर्तमान युग की विभीषिकाओं के पीछे बौद्धिकता,आसुरी वृत्तियों और भौतिकता को ही मूल कारण माना। कामायनी में प्रसाद जी ने जो भी विषय-वस्तु प्रस्तुत किया है, उसी का प्रत्यभिज्ञादर्शन ही है।

दूसरे शब्दों में हमयह कहेंगे-दर्शन अपने आप में पर्याप्त वृहद सिद्धांत है और प्रसाद जी ने कामायनी में इसके अनेक सिद्धांतों को अपनाया है। यहां हम कामायनी में प्रयुक्त प्रत्यभिज्ञादर्शन के सिद्धांतों का सूक्ष्म विवेचन करेंगे।

कामायनी में प्रसाद जी ने अपने दार्शनिक तत्वों के अंतर्गत 'चिति'अर्थात आत्मा के स्वरूप की चर्चा की है। इस संबंध में डॉक्टर द्वारिका प्रसाद सक्सेना का कथन है-"शैव-दर्शन में चिति का विशिष्ट महत्व है। शिव और शक्ति के सामरस्यके रूप में चिति का वर्णन हुआ है।ये दोनों अभिन्न है। शिव परम तत्व, तो चिति आनंद, इच्छा, ज्ञान क्रियारूप है। जीवात्मा उसका ही परिमित रूप है, जो माया से होकर अपने स्वरूप को नहीं पहचान पाती। जब उसे प्रत्यभिज्ञान होता है तो वह शिव रूप होकर शिव को प्राप्त हो जाती है। यह सारा विश्व चैतन्य आत्मा या चितिका ही आभास या प्रतिबिं ब है। चिति की इच्छा से ही संसार का उन्मेष-निमेष, उदय-प्रलय अथवा उन्मीलन-निमिलन होता, क्योंकि उत्पत्ति और संहार दोनों शिव की इच्छा पर निर्भर है।"

प्रसाद जी ने कामायनी में अनेक स्थलों पर महाचिति अर्थात शिव के कार्यों के बारे में वर्णन किया है-

चितिमय चिता धधकती अविरल,

महाकाल का विषय नृत्य था,
विश्व रंध्र ज्वाला से भरकर,
करता अपना विषम कृत्य था।

इस प्रकार कामायनी में'चिति' का जो वर्णन है,वोशैव-दर्शन के आधार पर ही है। कामायनी में जीव संबंधी वर्णन भी है।प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार जीवही पुरुष है।

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल हाह,
एक पुरुष भीगें नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

कामायनी में प्रसाद जी ने मनु के विविध अवस्थाओं का चित्रण प्रत्यभिज्ञादर्शन के अनुसार ही किया। चिंता सर्ग से लेकर कर्म सर्ग तक मनु की जागृत अवस्था देखी जा सकती है। इस अवस्था में मनु दृश्यमान जगत को ही महत्व देता है। तथा इस प्रकार अपने जीवन में वाह्य इंद्रियों से उत्पन्न साधारण ज्ञान को ही समझता है। मनु जब-जब इंद्रिय सुख की बात होती है, तब-तब जीवन की यही स्थिति पाठक के समझमें आती है। ईर्ष्या वश मनु श्रद्धा को त्याग कर आगे निकल जाता है। ऐसी स्थिति अन्य सर्गो में भी मनु की देखी जा सकती है-

"शापितसा मैं जीवन का यह,
ले कंकाल भटकता हूं,
उसी खोखले पन में जैसे,
कुछ खोजता भटकता हूं।

कामायनी मेंतुरीय अवस्था का उल्लेख 'रहस्य सर्ग' में देखने को मिलता है, जब श्रद्धा मनु की शांति के लिए प्रार्थना करती है-

प्रतिफलित हुई सब आंखें,
उस प्रेम ज्योति विमला से,
सब पहचाने से लगते,
अपनी एक कला से।

कामायनी में उन सभी कोषो का भी वर्णन है, जोप्रत्यभिज्ञा दर्शन में वर्णित हैं। कामायनी में मनु अर्थात मन,मनुष्यकोष,प्राणमयकोष तथा अन्नमयकोष से ग्रस्त हैं। जब वह अपने आप को इन सब से अलग कर लेता है, तो वह भगवान शंकर के दर्शन करके विज्ञानमयकोष में प्रवेश कर जाता है। फलस्वरूप मनु को अखंड आनंद की प्राप्ति हो जाती है।

प्रसाद जी प्रकृति और नियति के विषय में जो विचारकामायनीमें व्यक्तकिए हैं,वो प्रत्यभिज्ञा दर्शन से पूरी तरह मेल खाती है। नियतिवाद के संबंध में प्रसाद जी का विचार है- " नियति परमात्मा की नियामक शक्ति है, जो सब पर शासन नियंत्रण करती है, समस्त उत्थान-पतन का मूल है, स्वतंत्र सत्ता है।" प्रत्यभिज्ञा दर्शन में नियति को शिव की शक्ति माना गया है। नियति ही ईश्वर की नियामिका शक्ति है। नियति के शासन से जीव तभी मुक्त होता है, जब वह जीव शिवत्व को प्राप्त कर लेता है। कामायनी में नियति का यह प्रभाव आरंभ से लेकर अंत तक देखने को मिलता है।यथा-

"लगते प्रबल थपड़े धुधले,
तट का था कुछ पता नहीं,
कातरता से भरी निराशा,
देख नियति पर बन रही।"

कामायनी में प्रसाद जी ने समरसता संबंधित सिद्धांत भी दिए हैं। यह समरसता कई रूपों में देखने को मिलती है। जैसे व्यक्ति की समरसता में जब मनु जल प्रलय से दुखित, हताश वनिराश होकर बैठा है, तब श्रद्धा मनु को समझाती है-

"दुख की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात।
एक परदा यह झीना नील,
छिपाए जिसमें सुख गात।"

प्रसाद जीव्यक्ति की ही समरसता की बात नहीं करते बल्कि सामाजिक समरसता की भी बात करते हैं। सामाजिक समरसता का अभाव ही संघर्ष का कारण है। पारिवारिक जीवन में पुरुष द्वारा नारी की अवहेलना संघर्ष का कारण है। कामायनी में मनु भी पुरुषत्व मोह में श्रद्धा की उपेक्षा करके उसे छोड़ देते हैं। फिर उन्हें विषाद में इधर-उधर भटकना पड़ता है, तब काम उन्हें सचेत करता है-

"तुम भूल गए पपुरुषत्व मोह में,
कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता ही संबंध बनी अधिकार,
और अधिकारी की।"

कामायनी में शैव मतानुसार प्रकृति और पुरुष की समरसता की भी बात की गई है। शैव मतानुसार प्रकृति और पुरुष के सामर्थ्य से अखंड आनंद की प्राप्ति होती है। तब एक चेतन स्वरूप आत्मा ही शेष रह जाती है-

"समरस थे जड़या चेतन,
सुंदर साकार बना था।
चेतनता एकविलसती,
आनंद अखंड घना था।।"

कामायनी के रहस्य सर्ग में समरसता की विस्तृत चर्चा है। प्रसाद के अनुसार इच्छा, ज्ञान और कर्म मानव मन की शास्वत प्रवृतियां है। यह तीनों अलग-अलग होने पर मानव जीवन में विषमता,अशांति को स्थान देती और समरसता होने पर आनंद का संचार करती हैं।

"ज्ञान दूर कुछ क्रियाभिन्न है,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक-दूसरे से न मिल सके,
यह विडंबना है जीवन की।"

कामायनी में शैव-दर्शन के अनुसार आनंद की प्राप्ति ही प्रमुख तत्व है।शैवागमों के अनुसार या आनंद वाह्य नहीं अपितु आत्मानंद होती है और यह शाश्वत अनुभूतियों का ही परिणाम होता है। कामायनी में प्रतिपादित आनंदवाद स्वामी बल्भाचार्य केकाम या आनंद के रूप में न होकर तांत्रिकों और योगियों की अंतरभूमि पद्धति पर आधारित है। प्रसाद जी ने शैवागमों की प्रत्यभिज्ञा प्रणाली को आधार बनाकर ही आनंदवाद की व्याख्या की है।प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अनुसार शिव को ही आनंद का मूल माना। कामायनी के रहस्य सर्ग में पहुंचकर कवि ने इच्छा,क्रिया और ज्ञान के समन्वय पर बल दिया है, और इसी से अखंड आनंद की सृष्टि स्वीकार की है। इस समन्वय के उपरांत सभी प्रकार के द्वैत समाप्त हो जाते हैं और आनंद की प्राप्ति होती है।यथा-

"समरस थे जड़ या चेतन,
सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती,
आनंद अखंड घना था।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद जी का जीवन-दर्शन पूर्णतया शैवागमों के प्रत्यभिज्ञा दर्शन से प्रभावित है।

संदर्भ सूची:-

- गजानन माधव मुक्तिबोध "कामायनी एवं पुनर्विचार"
- द्वारिका प्रसाद सक्सेना "कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन"
- जयशंकर प्रसाद "कामायनी"
- डा. रामलाल सिंह "कामायनी" अनुशीलन